



S.R. CENTURY PUBLIC SCHOOL

(A SCHOOL WITH A DIFFERENCE) Bahadurgarh - 124507

Extends Heartiest Felicitations for **EXCELLENT RESULT** in **CLASS XII** to all the Parents, Teachers and Students for this Highly Appreciable Achievement

JEE MAIN QUALIFIED



VANSH SHARMA HARSHIT SATYABRATT BHAVYA

CLASS XII CBSE RESULT (2025-26)



YANA

97.8%



VANSH SHARMA

97.6%



MUSKAN

97%



HARSHIT

96.8%



ROHIT

96.4%



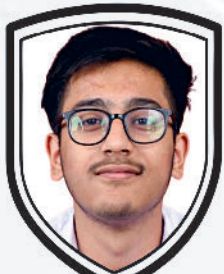
YASHIKA

96.4%



HANSHIKA

96.2%



KHUSHAL

96.2%



RASHI GOYAL

95.8%



GARGI

95.6%



KUNAL

95.4%



PRIYA

95.4%



DIVYANSH

95.2%



KHUSHI GARG

95%



KHANAK

94.6%



DIPALI

94.4%



AKSH GUPTA

94%



NITESH KUMAR

93.8%



PAWAN KUMAR

93.8%



ISHAAN GAUTAM

93.4%



AANYA GARG

93.2%



NEERAJ DALAL

93%



SAKSHI MITTAL

92.6%



VANSH DESWAL

92.4%



KANISHKA

92.4%



HANSHIKA

92%



DEV

92%



YOGITA

92%



KESHAV

91.8%



NIKUNJ DAHIYA

91.4%



SUJAL RATHEE

91.4%



SWATI

91.2%



MAHI

91%



DIVYA RATHEE

90.8%



KUSH GUPTA

90.6%



GEETIKA

90.6%



NIKITA KHARB

90.6%



RADHIKA

90.6%



SANJANA

90.4%



JISHNU GARG

90.4%



NIKITA SHARMA

90%



HARSHIKA

90%



KESHAV

90%

SUBJECT WISE HIGHEST SCORE

MUSIC- 100, BUSINESS STUDIES- 100, HISTORY- 100, COMPUTER SCIENCE- 99, PHYSICAL EDUCATION- 99, MATHS- 99, ECONOMICS- 98, GEOGRAPHY- 98, HINDI- 98, ENGLISH- 98, PHYSICS- 98, CHEMISTRY- 97, PSYCHOLOGY- 97, POLITICAL SCIENCE- 97, ACCOUNTANCY- 97, BIOLOGY- 96

S.R. Century Public School
Delhi-Rohtak Road, Bahadurgarh

S.R. Century Public School
Badli Road, Bahadurgarh

ख़बर संक्षेप



झज्जर। पौधरोपण करते दीपक प्रधान।

पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

झज्जर। गांव निमाणे में शनिवार को पर्यावरण संरक्षण और हरियाली बढ़ाने के उद्देश्य से पौधरोपण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान पौधरोपण कर लोगों में पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। दीपक प्रधान ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को देखते हुए पौधरोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। लोगों से अपील की कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा लगाकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। उन्होंने लोगों से जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य विशेष दिवसों पर भी पौधरोपण करने का आह्वान किया।

मधुमेह रोगी रखें पैरों का ध्यान : डॉ. अग्रवाल

बहादुरगढ़। मधुमेह से ग्रसित रोगियों के लिए एक जागरूकता संगोष्ठी हुई। इसमें आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. गौतम अग्रवाल ने कहा कि मई-जून के अत्यधिक गर्म महीनों में मधुमेह के रोगियों के लिए स्वास्थ्य संबंधी कई चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं। विशेष रूप से पैरों की देखभाल अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। मधुमेह के कारण कई मरीजों के पैरों में सुन्नपन (नर्व डैमेज) आ जाता है। इस स्थिति में वे गर्मी और ठंडक को ठीक से महसूस करने में असमर्थ होते हैं, जो उनकी स्थिति को और अधिक जटिल बना सकता है।

बच्चों के मोबाइल चलाने पर रखें नजर

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अभिभावक-शिक्षक बैठक का सफल आयोजन किया गया। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. अमित छिकारा की अध्यक्षता और मुख्य संरक्षक प्रो. राजीव दहिया की देखरेख में पीटीएम संपन्न हुई।

प्रो. राजीव दहिया ने छात्रों के समग्र विकास के लिए घर और कॉलेज के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास का आह्वान किया। प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देने की कॉलेज की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

कला, वाणिज्य और विज्ञान समेत सभी संकाय सदस्यों ने बातचीत के दौरान छात्रों और

छारा के विद्यालय की छात्राओं का 10वीं बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन

कशिश ने 500 में से 496 अंक प्राप्त कर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

छारा के ग्रामीण वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं ने 10वीं बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया है। कशिश ने 500 में से 496 अंक प्राप्त कर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कनक और गरिमा ने 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। अंशू ने 95.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल में तृतीय स्थान हासिल किया। जबकि पायल व नैसी ने 95, खुशी ने 94.4, पूर्वा ने 94, करिश्मा ने 92.2, निधि ने 92, यशिका ने 91.2, अनन्या ने 91, इशाना, प्रियंका, वंशिका व निखिल ने 90 प्रतिशत अंक हासिल किए। प्रिंसिपल ने बताया कि कुल 40 विद्यार्थियों में से 30 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



बहादुरगढ़। छात्राओं को मिठाई खिलाती स्कूल प्रिंसिपल व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

बालौर स्कूल का परीक्षा परिणाम शानदार

बहादुरगढ़। बालौर के शहीद शेर सिंह राजकीय हाई स्कूल का इस वर्ष दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम सराहनीय रहा। स्कूल के 6 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया। जबकि 30 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्यापिका मोनिका व सुषमा के मार्गदर्शन से विद्यार्थियों ने शानदार उपलब्धि हासिल की। डॉ. संजीव कुमार खत्री ने विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समस्त स्टाफ को बधाई दी। इस अवसर पर अभिषेक चौहान व हरीश दत्त शर्मा ने अधिक से अधिक बच्चों का प्रवेश विद्यालय में करवाने का आह्वान किया।



बहादुरगढ़। पीटीएम में अभिभावकों से चर्चा करते जसोरखेड़ी कॉलेज के प्रोफेसर।

जसोरखेड़ी कॉलेज में हुई पीटीएम

बहादुरगढ़। गांव जसोरखेड़ी में स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डॉ. संदीप, डॉ. प्रियंका अग्रवाल, डॉ. सुनील कुमार, अनिल कुमार, डॉ. पुनम ने किया। अध्यापकों ने अभिभावकों के साथ छात्राओं की उपलब्धियों, विभिन्न गतिविधियों व शैक्षणिक उन्नति के बारे में जानकारी सांझा की। अभिभावकों से आवश्यक सुझाव व मार्गदर्शन भी मांगा ताकि छात्राओं का शैक्षणिक के साथ समग्र विकास किया जा सके। अध्यापकों ने अभिभावकों से नए सत्र प्रवेश की तिथियों की जानकारी भी सांझा की गई। प्राचार्या डॉ. संदीप व सभी अध्यापकों ने अभिभावकों का धन्यवाद किया।



बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाते योगाचार्य जगदीश सहवाग।

मातन स्कूल में दी सेहत और संस्कारों की सीख

बहादुरगढ़। गांव मातन के राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में निःशुल्क योग-प्राणायाम कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में योगाचार्य जगदीश कुमार ने विद्यार्थियों को योग के महत्व, अष्टांग योग, देशभक्ति, पितृसेवा, प्रकृति संरक्षण व वृक्षारोपण आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। योगाचार्य जगदीश कुमार ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे गुरुसेवा, समाजसेवा, माता-पिता की सेवा तथा धर्म और संस्कृति के प्रति समर्पित रहें। राष्ट्र की प्रगति में अपनी भागीदारी दें। उन्होंने विद्यार्थियों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए नशे से दूर रहने, संतुलित खान-पान अपनाने और सामाजिक बुराइयों से बचने का संदेश दिया। उनके अनुसार विद्यार्थी नियमित व्यायाम, योगाभ्यास और अनुशासित दिनचर्या अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। प्राचार्य राजकुमार पंचाल समेत स्टाफ ने भी योगिक क्रियाओं में भाग लिया।

जूपिटर का रिजल्ट रहा शत-प्रतिशत

बहादुरगढ़। सीबीएसई के 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में रोहद स्थित जूपिटर पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। स्कूल का परिणाम शत प्रतिशत रहा। बारहवीं कक्षा में धैर्य ने प्रथम, नवीता ने द्वितीय व निशंत खत्री ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्कूल निदेशक राजकुमार रूहिल व प्राचार्य राजपाल सिंह सनवाल ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मेरिट सूची में आए मान सिंह स्कूल के 34 विद्यार्थी

बहादुरगढ़। लाइनपार स्थित मान सिंह हाई स्कूल का परीक्षा परिणाम बेहद शानदार रहा। स्कूल के 56 विद्यार्थियों में से 34 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में नाम दर्ज कराया। जबकि 22 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी से परीक्षा पास की। स्कूल का परिणाम शत प्रतिशत रहा। स्कूल वेयरपर्सन निर्मला देवी, निदेशक राजेंद्र छिकारा, प्राचार्य नरेंद्र कुमार, उप प्राचार्य अशोक कुमार ने सभी परीक्षार्थियों व उनके अभिभावकों, शिक्षकों को भी बधाई दी। निम्न में 95 प्रतिशत, संजना, वर्षा रॉय व अमि गुप्ता ने 91.2 प्रतिशत और साक्षी ने 449.89.8 प्रतिशत अंक हासिल किए।

कानोंदा में मेधावी विद्यार्थियों को किया सम्मानित

पारितोषिक वितरण समारोह एवं मेधावी छात्र सम्मान रैली निकाली

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

कानोंदा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पारितोषिक वितरण समारोह एवं मेधावी छात्र सम्मान रैली का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रिंसिपल सरोज देवी ने की और मंच संचालन सुरेश कुमार वर्मा ने किया। सरपंच विकास और समाजसेवी जगबीर मेहरा ने भी विद्यार्थियों को



बहादुरगढ़। समारोह में मेधावी विद्यार्थियों के साथ स्कूल स्टाफ।

फोटो: हरिभूमि

प्रोत्साहित किया। स्कूल का 10वीं कक्षा का वार्षिक परिणाम 98.44 प्रतिशत रहा। स्कूल की 48 छात्रों

बाढ़ राहत प्रशिक्षण शिविर स्पर्धा में झज्जर की टीम बनी चैंपियन

झज्जर। गत दिनों कुरुक्षेत्र स्थित ब्रह्मसरोवर में आयोजित बाढ़ राहत प्रशिक्षण शिविर में जिला झज्जर के कर्मचारियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले का नाम रोशन किया। झज्जर पहुंचने पर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने टीम के सभी सदस्यों को इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि आपदा प्रबंधन एवं राहत कार्यों में प्रशिक्षित कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि जिले के कर्मचारियों ने अनुशासन, समर्पण और टीम भावना का परिचय देते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।



झज्जर। कर्मचारियों को सम्मानित करते हुए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल।

बच्चों ने जीव सेवा के साथ सीखे संस्कार

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

सेंट स्टीफन इंडियन स्कूल के विद्यार्थियों ने शनिवार को गार्डियन ऑफ एंजल्स ट्रस्ट का शैक्षिक भ्रमण किया। इस दौरान बच्चों को मानवीय गुणों, दया, करुणा एवं पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता से अवगत करवाया गया। विद्यार्थियों ने पशुओं के लिए खाद्य सामग्री एकत्रित कर सहयोग किया तथा नगद राशि भी दान की।

संस्था प्रमुख हरि किशन मंगले ने विद्यार्थियों को घायल एवं असहाय जीवों की देखभाल से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आश्रय स्थल में घायल पशुओं के उपचार, ऑपरेशन एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है। प्रधानाचार्य

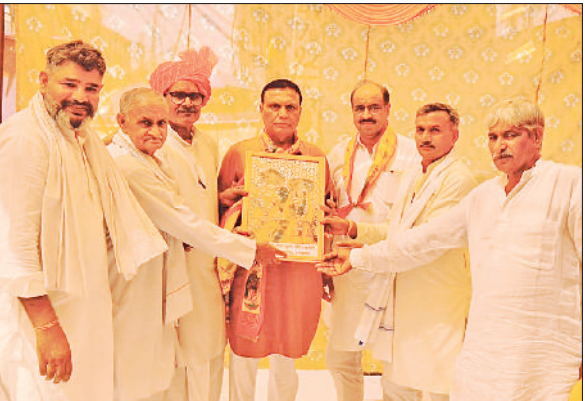


बहादुरगढ़। शेल्टर प्रमुख को सहयोग राशि भेंट करती प्रिंसिपल व अन्य।

रेखा यादव ने पशुओं पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करने, उनके अधिकारों एवं सुरक्षा के बारे में बताया।

ऐसी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में पर्यावरण एवं जीव-

जंतुओं के संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया गया। इस अवसर पर बालौर स्कूल की अध्यापिका अनीता चहल, जीव प्रेमी सचिन निझावन भी मौजूद रहे।



बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून को तस्वीर भेंट करते ग्रामीण।

फोटो: हरिभूमि

बालौर भंडारे में शरीक हुए विधायक राजेश

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

गांव बालौर स्थित श्री गौरी शंकर एवं श्री राधा कृष्ण मंदिर में शनिवार को शुद्ध देसी घी के विशाल भंडारे एवं हवन का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया।

कार्यक्रम में विधायक राजेश जून ने विशेष रूप से शिरकत कर पूजा-अर्चना की और मंदिर में माथा टेककर क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। उन्होंने अपनी नेक कमाई से 11 हजार रुपए का दान मंदिर कमेट्री को दिया।

एमडीयू की पीजी परीक्षाएं 20 मई से शुरू होंगी

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) ने मई-2026 की स्नातकोत्तर (पीजी) परीक्षाओं का शेड्यूल जारी कर दिया है। एमए, एमएससी और एमकॉम (सीबीएसएस स्कॉम) के द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर (रेगुलर, री-अपीयर व इम्प्रूवमेंट) की परीक्षाएं 20 मई से शुरू होंगी।

अंतर सदनीय क्लब मीट प्रतियोगिता में रमन सदन के विद्यार्थी छाए

हरिभूमि न्यूज़ ►► झज्जर

आरईडी स्कूल में शनिवार को अंतर सदनीय क्लब मीट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अपनी बौद्धिक, कलात्मक और वैज्ञानिक प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के अंतर्गत लिटरेरी क्लब, बर्डिंग साइंस क्लब, सोशल एंड आईटी क्लब तथा सोशल साइंस क्लब

■ आरईडी स्कूल में शनिवार को हुई प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी बौद्धिक कलात्मक और वैज्ञानिक प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया

गतिविधियां आयोजित की गईं। प्रतियोगिता परिणामों में ग्यारहवीं से बारहवीं कक्षा वर्ग में टैगोर

सदन तथा नौवीं से दसवीं कक्षा वर्ग में गांधी सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रकार छठी से आठवीं कक्षा में टैगोर सदन व तीसरी से पांचवीं कक्षा वर्ग में रमन सदन के विद्यार्थी प्रथम रहे। ओवरऑल परिणामों में रमन सदन के विद्यार्थी प्रथम व टैगोर सदन के विद्यार्थी द्वितीय रहे। प्राचार्या गीता गाबा ने सभी विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी।

फोटो: हरिभूमि



झज्जर। प्राचीन हनुमान मंदिर में लगाई गई छबील में राहगीरों में शर्बत वितरित करते हुए श्रद्धालु।

फोटो: हरिभूमि

शनि जयंती पर शहर में लगे भंडारे

डाकौतों वाली गली में उत्सव कलश शोभायात्रा निकाली

हरिभूमि न्यूज़ ►► झज्जर

शनि जयंती के उपलक्ष्य में शनिवार को शहर में विभिन्न स्थानों पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने शनि देव की प्रतिमा पर सरसों का तेल चढ़ाया और पूजा-अर्चना की। सिलानी गेट स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा जहां यज्ञ व भंडारे का आयोजन किया वहीं डाकौतों वाली गली में दो दिवसीय उत्सव के चलते पहले दिन कलश शोभायात्रा

निकाली गई तथा दूसरे दिन भंडारे का आयोजन किया गया। शहर के मेन बाजार स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा मीठे पानी की छबील लगाकर जहां राहगीरों को शर्बत पिलाया गया वहीं श्रद्धालुओं में ब्रेड-पकोड़े भी वितरित किए गए। सिलानी गेट प्राचीन हनुमान मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में भक्तों ने हवन में आहुतियां डाली व भगवान शनिदेव से परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की।

ने उनसे कहा था कि चेयरपर्सन के खिलाफ हो जाओ। जब उन्होंने मना किया तो उन्हें ही हटाने की साजिश रची।



कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन

नमस्कार डॉक्टर साहब! हम एक ऐसा बेबी चाहते हैं, जो हमारी जेनेटिक बीमारियों से दूर रहे। उसका आई क्यू लेवल शानदार हो, चरमा न लगे उसको, टॉल फिगर हो, कॉम्प्लेक्शन फेयर हो।

क्या आपने कल्पना की है कि आने वाले दौर में पैरेंट्स किसी फर्टिलिटी क्लीनिक पर जाकर डॉक्टर से कुछ ऐसा कहेंगे? यह मजाक की बात या कोरी कल्पना नहीं है। विज्ञान इतनी तरक्की कर रहा है कि निकट भविष्य में यह संभव होगा। इस तकनीक से पैदा होने वाले बच्चों को 'डिजाइनर बेबी' कहा जाएगा।

क्या है यह तकनीक

डिजाइनर बेबी ऐसा बच्चा होता है, जिसके जेनेटिक स्ट्रक्चर (आनुवंशिक संरचना) को पैदा होने से पहले ही बदल दिया जाता है। यह मुख्य रूप से 'क्रिसपर-केस नाइन' जैसी जीन एडिटिंग तकनीक के जरिए किया जाता है। इसके तहत भ्रूण से खराब जीन कतरकर होने वाले माता-पिता के पसंदीदा गुणों वाले जीन को जोड़ा जा सकता है। ये कस्टम-मेड बच्चे होंगे। वांछनीय गुणों वाले बच्चे पैदा करने यानी बनाने के लिए, होने वाले माता-पिता आईवीएफ क्लीनिक में भ्रूणों का चयन बीमारी के जोखिम के आधार पर कर रहे हैं। इस प्रक्रिया को प्री-इम्प्लंटेशन जेनेटिक डायग्नोसिस कहा जाता है। मुख्य रूप से वंशानुगत बीमारियों को रोकने के लिए इसका अभ्यास किया जाता है। इसमें आईवीएफ से बनाए गए भ्रूणों की स्क्रीनिंग की जाती है और माता-पिता उस भ्रूण का चयन करते हैं, जिसे वे एक ऐसे बच्चे के लिए प्रत्यारोपित कर सकते हैं, जिसमें आनुवंशिक विकार के सबसे कम जोखिम होने की भविष्यवाणी की जाती है। इसमें एक एंब्रियो-सेलेक्शन/स्क्रीनिंग कंपनी और आईवीएफ



यूजेनिक्स क्या है

यूजेनिक्स एक ऐसा विचार और पद्धति है, जिसका उद्देश्य मानव आबादी की आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार करना है, जिसमें स्वस्थ और वांछनीय गुणों वाले लोगों के प्रजनन को बढ़ावा दिया जाता है और कम वांछनीय या अव्यापक गुणों वाले लोगों के प्रजनन को रोकना जाता है, जो अकस्मर जबड़न लबाखड़ी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं से जुड़ा रहा है, खासकर नाज़ी जर्मनी और अमेरिका में। इसे विज्ञान के रूप में खारिज कर दिया गया है।



कविता

अवतार सिंह अक्षरजीवी

स्लेटीपन

कोई सुख, नहीं होता पूरा सुख
कोई दुख, नहीं होता पूरा दुख
चरित्र आधे-अधूरे होते हैं
भावनाएं-कई रंगों का मिश्रण,
एक कोने पर थोड़ा-सा सफेद
दूसरे किनारे पर जरा-सा काला
इनके बीच में बहुत सारा स्लेटी होता है
सुख में नुकसान ढूंढ़ लेता है मन
और दुख में आनंद तलाश लेता है,
गीतों में से निकाल सकते हैं कंक्रीट
और राख में भी संगीत देख सकते हैं,
किसी का स्वभाव कैसा भी हो
हमारे अनुकूल हो, बस ठीक है जैसे
गर्भियों का आलोचक है संसार लेकिन
शहर की खाली सड़कें, कम ट्रैफिक
इस ऋतु को बेहतर घोषित करने में
कहीं न कहीं विवश सा कर देता है।

अब जन्मेंगे मनचाहे डिजाइनर बेबी!

अब तक तो यही माना जाता रहा है कि जन्म लेने वाले बच्चे का रूप, रंग, गुण या उसकी कोई बीमारी प्रकृति ही निर्धारित करती है। लेकिन जेनेटिक इंजीनियरिंग की नई तकनीक से आने वाले समय में मनचाहे यानी कस्टमाइज्ड बेबी जन्म ले सकेंगे। क्या है यह तकनीक, क्या हो सकते हैं इसके फायदे या नुकसान, यहां बता रहे हैं विस्तार से।



ब्लास्टोसिस्ट क्या है

ब्लास्टोसिस्ट भ्रूण के विकास का एक प्रारंभिक चरण है, जो फर्टिलाइजेशन के लगभग 5-6 दिनों बाद बनता है, जिसमें लगभग 200-300 कोशिकाएं होती हैं और इसमें दो मुख्य भाग होते हैं, आंतरिक कोशिका द्रव्यमान (जो शिशु बनेगा) और ट्रॉफोब्लास्ट (जो प्लेसेंटा बनेगा)। यह वह अवस्था होती है, जब भ्रूण गर्भाशय की परत में प्रत्यारोपित होता है, खासकर आईवीएफ प्रक्रियाओं में।

प्रोवाइडर 8-14 दिनों तक रोजाना हार्मोन इंजेक्शन देकर कम से कम 15 अंडे निकालते हैं, जिन्हें पसंद के स्पर्म से फर्टिलाइज किया जाता है। 4-5 दिनों के बाद, एक ब्लास्टोसिस्ट बनता है। यह कोशिकाओं की एक खोखली गेंद जैसी होती है, जिसमें एक अंदरूनी द्रव्य और बाहरी परत होती है। बाहरी परत प्लेसेंटा में विकसित होती है। अंदरूनी द्रव्य भ्रूण बनता है। हर भ्रूण से निकाले गए अंशों की जेनेटिक बीमारी/क्रोमोसोमल असामान्यताओं के लिए स्क्रीनिंग की जाती है और मापे गए हर पैरामीटर के लिए पॉलीजेनिक (कई-जीन) स्कोर दिए जाते हैं। माता-पिता चुनते हैं कि कौन-सा भ्रूण इम्प्लांट करना है। दुनिया के सबसे पहले डिजाइनर बेबी होने का दावा वर्ष 2018 में चीन के वैज्ञानिक हे जियानकुई ने किया था, जिन्होंने जुड़वां बच्चों (लुलु और नाना) के जीन एडिट किए थे।

जीन एडिटिंग के प्रभाव

जीन एडिटिंग के द्वारा डिजाइनर बेबी बनाने के कई प्लस और माइनस परिणाम हो सकते हैं।
बीमारियों से मुक्ति: इस तकनीक का असली उद्देश्य बच्चों को कैंसर, अल्जाइमर और एचआईवी जैसी वंशानुगत बीमारियों से बचाना है।
बनने सुपर ह्यूमन: जैसे-जैसे तकनीक ज्यादा विकसित होगी भविष्य में वैज्ञानिक ऐसी कोशिश कर सकते हैं, जिससे बच्चे की मांसपेशियों की ताकत और याददाश्त को बढ़ाया जा सकेगा और वे 'सुपर ह्यूमन' बन सकें। कुछ देशों में आईवीएफ क्लीनिक पहले से ही माता-पिता को बच्चे की आंखों का रंग चुनने का विकल्प देने की दिशा में शोध कर रहे हैं। वर्तमान में यह प्रक्रिया इतनी महंगी है कि इसे केवल दुनिया के अमीर लोग ही अपना सकते हैं।

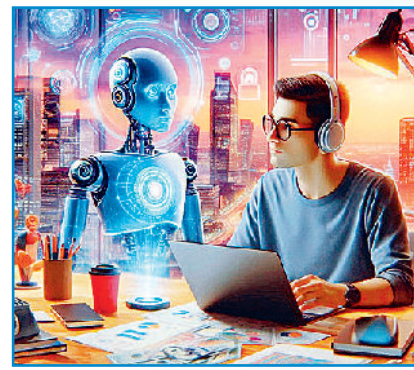


समझ पाता वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं एकटक उसके मन का बोझ हल्का होते देखता रहा। कुछ समय बीता और वह धीरे से कुछ बुदबुदाई। मैंने सुना वह प्रार्थनाचक्र तर रही थी। 'मुझे माफ कर दो सुमी! मैं हार गई हूं। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' उसकी आवाज की कंपकंपी को मैंने सर्द झोंके सा महसूस किया। एक ठंडी सिहरन मेरे तन-बदन में दौड़ गई। कुछ देर बाद मैं चाय बनाकर ले आया। मेरे आग्रह पर उसने चाय का कप उठा लिया। 'याद है मिनी...' मैंने उसे टटोलते हुए कहा, 'मैंने कभी भी अपने हाथ से चाय नहीं बनाई और न ही मैं आज तक ठीक से चाय बनाना सीख सका, क्योंकि तुमने मुझे अपने ऊपर इतना निर्भर कर दिया था। तुम कहती थी कि मेरे होते तुम चाय क्यों बनाओगे? सब कुछ बदल गया इधर कुछ

प्रतिका चर्चा / विज्ञान भूषण

लोक-संस्कृति का प्रवाह

रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी



यंगस्टर्स को लुभाएं प्यूचरिस्टिक जॉब्स

अपकमिंग ट्रेड

अनु जैन

आज के दौर में यंगस्टर्स के लिए करियर की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। अब डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी ही एकमात्र 'सफल' विकल्प नहीं रह गए हैं। अगर आपमें हुनर है और आप लीक से हटकर सोचने और करने का जज्बा रखते हैं, तो आज का डिजिटल युग आपको शानदार इनकम के मौके दे सकता है। अच्छी बात यह है कि 'प्यूचरिस्टिक' जॉब्स के लिए आपको किसी बड़े कॉलेज की भारी-भरकम फीस भरकर डिग्री पाने की जरूरत नहीं है। आपमें नई टेक्नोलॉजी सीखने की लगन होनी चाहिए। ऐसे ही कुछ प्यूचरिस्टिक जॉब्स के बारे में आप भी जानिए, ताकि आने वाले दौर के लिए आप खुद को टेकरेडी बना सकें।

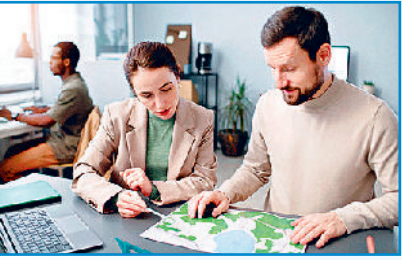


डेटा डिटैक्टिव: करियर की दुनिया में कहा जाता है कि 'डेटा नया हीरा है।' डेटा साइंटिस्ट का काम बिखरे हुए आंकड़ों से अपने लिए काम की जानकारी निकालना है। यह जॉब उन युवाओं के लिए शानदार है, जिनकी गणित और लॉजिक पर पकड़ मजबूत है। इसमें शुरूआती सैलरी ही कई पारंपरिक नौकरियों के टॉप लेवल के बराबर होती है। गूगल खुद कोर्सों जैसे प्लेटफॉर्म पर डेटा एनालिटिक्स और साइबर सिक्योरिटी के सर्टिफिकेशन कोर्स कराता है। साथ ही साइबेरी, साइबर सिक्योरिटी संबंधी नई तकनीकें सीखने के लिए यह दुनिया का सबसे बड़ा फ्री कम्युनिटी प्लेटफॉर्म है।
गेमिंग और ई-स्पोर्ट्स: वीडियो गेम अब सिर्फ टाइम पास नहीं रहा। प्रोफेशनल गेमर्स, गेम स्ट्रीमर्स और गेम डेवलपर्स आज लाखों-करोड़ों में खेल रहे हैं। इंटरनेशनल ई-स्पोर्ट्स टूर्नामेंट्स में प्राइज मनी अब किसी क्रिकेट वर्ल्ड कप से कम नहीं होती। अगर आप इसमें अपनी जगह बनाना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। अपना खास फीलड चुनें। ई-स्पोर्ट्स का मतलब सिर्फ गेम खेलना नहीं है। आप इनमें से अपनी रुचि के अनुसार कई क्षेत्र चुन सकते हैं, जैसे प्रोफेशनल प्लेयर यानी टूर्नामेंट में हिस्सा लेना, कंटेंट क्रिएटर या स्ट्रीमर यानी यूट्यूब या ट्विच पर गेमप्ले दिखाना, गेम एनालिटिस्ट/कोच यानी गेम की रणनीति समझना, मैनेजमेंट यानी टीम मैनेजर या इवेंट ऑर्गनाइजर बनना।
आपको इसके लिए जरूरी स्किल्स सीखनी पड़ेंगी। किसी एक गेम को चुनें और उसमें एक्सपर्ट बनें। इसके लिए रोजाना प्रैक्टिस और अपनी गलतियों का आकलन करना जरूरी है। इनके साथ-

जिस तेजी से तकनीक का दखल बढ़ता जा रहा है, हमारी जीवनशैली आने वाले समय में पूरी तरह बदल जाएगी। आने वाले दिनों में यंगस्टर्स को हार्ड इनकम वाली कई ऐसी जॉब्स मिलेंगी, जो पूरी तरह हाईटेक होंगी। इनमें से कुछ प्यूचरिस्टिक जॉब्स पर एक नजर।

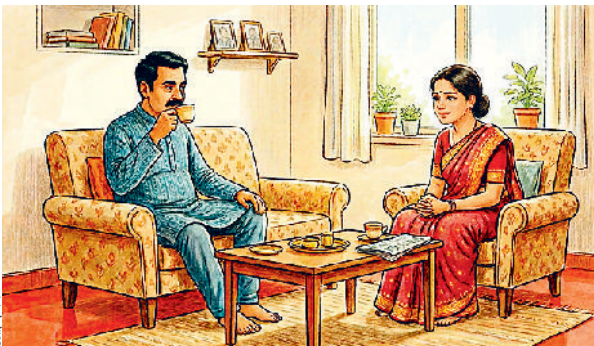
यंगस्टर्स को लुभाएं प्यूचरिस्टिक जॉब्स

साथ टीम के साथ तालमेल बिठाने के लिए अच्छी बातचीत की कला सीखें। महारत पाने के लिए सबसे जरूरी है तकनीकी ज्ञान।
प्रॉम्ट इंजीनियरिंग: चैटजीपीटी जैसे एआई टूल्स के आने से अब 'प्रॉम्ट इंजीनियर' की भारी डिमांड हो गई है। इसमें आपको कोडिंग नहीं, बल्कि एआई से सही तरीके से काम करवाने की कला (सही निर्देश देना) आना चाहिए। बड़ी कंपनियां इसके लिए करोड़ों का पैकेज देने को तैयार हैं। इसे सीखने के लिए एंड्रयू एनजी द्वारा संचालित, चैटजीपीटी प्रॉम्ट इंजीनियरिंग फॉर डेवलपर्स एक शानदार फ्री कोर्स है। इसके अलावा लर्न प्रॉम्टिंग एक ओपन-सोर्स गाइड है, जो आपको मुफ्त में एआई से बेहतर तरीके से कम्युनिकेट करना सिखाती है।
कंटेंट क्रिएशन और इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग: यूट्यूब, इंस्टाग्राम और पॉडकास्ट अब सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि फुल-टाइम बिजनेस बन चुके हैं। एक खास विषय पर अच्छी पकड़ और दर्शकों से जुड़ने का हुनर आपको ब्रांड एंडोर्समेंट के जरिए रातों-रात सेलिब्रिटी और अमीर बना सकता है। फाइनेंस की जानकारी देने वाले फिनान्स्युएंसर और डिजिटल मार्केटिंग का फीलड भी अच्छा है। डिजिटल मार्केटिंग की बेसिक जानकारी के लिए आप गूगल डिजिटल रैंगर मुफ्त में इस्तेमाल कर सकते हैं।
सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट: दुनिया अब पर्यावरण को लेकर गंभीर है। कंपनियां ऐसे लोगों को खोजती रहती हैं, जो उन्हें 'ईको-फ्रेंडली' बनने में मदद करें। अगर आप पर्यावरण प्रेमी हैं और बिजनेस की समझ रखते



हैं, तो यह क्षेत्र भविष्य का सबसे बड़ा मार्केट है। सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट वह पेशेवर होता है, जो कंपनियों और संगठनों को पर्यावरण के अनुकूल काम करने और अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की सलाह देता है। इसके लिए संबंधित शैक्षणिक योग्यता जरूरी है। पर्यावरण प्रबंधन या ईएसजी में (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) विशेषज्ञता हासिल करना आपको प्रोफाइल को बेहतर बनाता है। एक सफल कंसल्टेंट बनने के लिए आपको तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स दोनों की आवश्यकता होती है। जैसे कार्बन उत्सर्जन और पानी के उपयोग जैसे डेटा का विश्लेषण करना आना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार रिपोर्ट तैयार करना आना चाहिए। अपने क्लाइंट के वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए स्थाई व्यावसायिक रणनीतियां बनाने की चतुराई होनी चाहिए। साथ ही आप में अपने क्लाइंट्स को जटिल पर्यावरणीय नीतियों को सरल भाषा में समझाने की कला भी होनी चाहिए। *

पतझड़



समझ पाता वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं एकटक उसके मन का बोझ हल्का होते देखता रहा। कुछ समय बीता और वह धीरे से कुछ बुदबुदाई। मैंने सुना वह प्रार्थनाचक्र तर रही थी। 'मुझे माफ कर दो सुमी! मैं हार गई हूं। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' उसकी आवाज की कंपकंपी को मैंने सर्द झोंके सा महसूस किया। एक ठंडी सिहरन मेरे तन-बदन में दौड़ गई। कुछ देर बाद मैं चाय बनाकर ले आया। मेरे आग्रह पर उसने चाय का कप उठा लिया। 'याद है मिनी...' मैंने उसे टटोलते हुए कहा, 'मैंने कभी भी अपने हाथ से चाय नहीं बनाई और न ही मैं आज तक ठीक से चाय बनाना सीख सका, क्योंकि तुमने मुझे अपने ऊपर इतना निर्भर कर दिया था। तुम कहती थी कि मेरे होते तुम चाय क्यों बनाओगे? सब कुछ बदल गया इधर कुछ

प्रतिका चर्चा / विज्ञान भूषण

लोक-संस्कृति का प्रवाह

रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी

सालों से! देखो तो चाय ठीक बनी है या नहीं? मिनी ने हां में फिर हिलाया और उसकी आंखें मेरे चेहरे पर ठहर गईं। प्रश्नां की यह मूक भाषा मैंने उसकी आंखों में पहली बार पढ़ी थी। 'तुम्हें पता है सुमी! मैं भी इतने बरस, इतनी अकेली रही हूं कि चैन की एक सांस भी न ले सकी। हर घड़ी तुम्हारे साथ बीते पल मुझे कुरेदते रहते। मेरा अहंकार मुझे धीरे-धीरे खोखला करता गया और मैं घुन लगे पेड़ की तरह अंदर से बिल्कुल बेजान हो गई। मुझमें

अकेले खड़े रहने की भी ताकत नहीं बची, सुमी मैं टूट गई हूं। मुझे मेरा सहारा वापस दे दो प्लीज। अब मैं तुम्हारे सहारे जीना चाहती हूं।' उसका क्रंदन मुझे भीतर तक सालता चला गया। दस साल पहले वह उस पत्ते की तरह मुझसे अलग हो गई थी, जो पतझड़ के मौसम में एक क्षण में अपनी शाख से अलग हो जाता है। उसने मुझकर भी नहीं देखा था तब। घर छोड़कर जाते समय उसने अपने दोनों बच्चों रजत और सजल को भी नहीं पुकारा। एक निष्ठुर मां बनकर उसने घर में कदम न रखने की कसम खाई थी और फिर लौटकर नहीं आई। आज दस साल बीतने के बाद वक्त ने करवट ली थी और हम दोनों उसी कमरे में एक बार फिर साथ बैठे हैं। *

प्रतिका चर्चा / विज्ञान भूषण

लोक-संस्कृति का प्रवाह

रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी

पापा-पापा आप ये क्या देख रहे हैं?' अशोक के बेटे ने पूछा। 'बेटा एक पुरानी तस्वीर देख रहा हूँ। अपने भाई-बहनों की।' आंखें नम करते हुए अशोक ने जवाब दिया। 'कौन-कौन है ये?' बेटे ने तस्वीर को गौर से देखते हुए पूछा। तस्वीर को दिखाते हुए अशोक बोले, 'पीली ड्रेस वाली तेरी बड़ी बुआ, पिंक ड्रेस में मंझली बुआ और लाल में जो बैठी है, वो छोटी बुआ।' 'और ये यही ड्रेस में कौन है?' बेटे ने पूछा। 'अरे यह मेरा छोटा भाई श्यामू यानी तेरा चाचा।' अशोक ने बताया। 'इसका मतलब नीली शर्ट वाले आप ही हैं।' बेटे ने शरारती लहजे में कहा। अशोक ने तुम्हारे सहारे जीना चाहती हूं।' उसका क्रंदन मुझे भीतर तक सालता चला गया। दस साल पहले वह उस पत्ते की तरह मुझसे अलग हो गई थी, जो पतझड़ के मौसम में एक क्षण में अपनी शाख से अलग हो जाता है। उसने मुझकर भी नहीं देखा था तब। घर छोड़कर जाते समय उसने अपने दोनों बच्चों रजत और सजल को भी नहीं पुकारा। एक निष्ठुर मां बनकर उसने घर में कदम न रखने की कसम खाई थी और फिर लौटकर नहीं आई। आज दस साल बीतने के बाद वक्त ने करवट ली थी और हम दोनों उसी कमरे में एक बार फिर साथ बैठे हैं। *

लघुकथाएं

मुस्कुराते हुए हां में गर्दन हिला दी। 'लेकिन पापा इनको तो मैंने कभी देखा ही नहीं। बुआ और चाचा अब कहाँ हैं और अपने घर क्यों नहीं आते?' बेटे ने फिर सवाल किया। अशोक ने स्वयं को संभावाते हुए कहा, 'हम सबको पिताजी ने यानी तुम्हारे दादाजी ने खूब पढ़ाया-लिखाया लेकिन...' 'लेकिन क्या पापा?' बेटे ने पूछा। 'ये सब विदेश में जाकर बस गए वहीं बड़ी-बड़ी कंपनियों में इंजीनियर हैं।' अशोक ने उदास मन से जवाब दिया। 'आप क्यों नहीं गए विदेश पापा पढ़े-लिखे तो आप भी बहुत है।' बेटे ने पूछा। 'बेटा, मैं भी जाने को तो चला जाता लेकिन बूढ़े मां-बाप की



जिम्मेदारी थी मुझ पर... उनकी देखभाल जो करनी थी।' अशोक ने कहा। 'तो क्या बड़े का ही कर्तव्य होता है मां-बाप की सेवा करना, छोटा का नहीं?' बेटे ने थोड़ा गंभीर होते हुए पूछा। 'होता तो है लेकिन कोई समझे तब ना।' उन्होंने लंबी सांस भरते हुए कहा। बेटे का चेहरा उतर गया। अशोक उठते चेहरे को देखकर अशोक ने पूछा, 'अरे तुमने मुंह क्यों लटका लिया?' उसने धीरे से कहा, 'इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं बड़ा होकर विदेश नहीं जा सकूँगा।' 'क... क... क्यों... नहीं जा सकते तुम?' अशोक ने आश्चर्य से पूछा। 'मैं तो आपका इकलौता बेटा हूँ ना इसलिए। मुझे तो बड़े होने की भूमिका निभानी है, छोटे होने की नहीं।' बेटावह कहते हुए अपने पापा के गले से लिपट गया। बेटे पर एक लुप्तबल के पन्ने हवा के संग फड़फड़ा रहे थे। *

प्रतिका चर्चा / विज्ञान भूषण

लोक-संस्कृति का प्रवाह

रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी

सुदर्शन सेंड आर्ट म्यूजियम पुरी

ओडिशा के समुद्र तट के पास स्थित इस म्यूजियम की स्थापना मशहूर सेंड आर्टिस्ट सुदर्शन पट्टनायक ने साल 2010 में की थी। इसका उद्देश्य सेंड आर्ट को वैश्विक पहचान दिलाना और सामाजिक संदेशों को कला के माध्यम से प्रस्तुत करना है। यहां रेत से बनी विशाल मूर्तियां प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें भगवान श्री जगन्नाथ, पर्यावरण संरक्षण, विश्व शांति, आध्यात्मिकता और भारतीय संस्कृति से जुड़े विषय प्रमुख होते हैं। रेत जैसी साधारण चीज को अद्भुत कला में बदल देना, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सामान्यतः समुद्र तट पर बनाई गई सेंड आर्ट कुछ समय बाद लहरों से नष्ट हो जाती है, लेकिन यहां विशेष तकनीक और केमिकल ट्रीटमेंट की मदद से स्कल्पचरों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाता है। अपनी इस अनूठी कला के लिए सुदर्शन पट्टनायक को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान मिल चुका है। *

काइट म्यूजियम अहमदाबाद

गुजरात के अहमदाबाद में स्थित इस काइट म्यूजियम की स्थापना सन 1985 में भानुभाई शाह की पतंगों के निजी संग्रह से हुई थी। यहां पतंगों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता देखने को मिलती है। यहां भारत और विदेशों की 125 से अधिक अत्यंत दुर्लभ और कलात्मक पतंगें रखी गई हैं, जिनमें जापान, मलेशिया, कोरिया, अमेरिका जैसे देशों की पतंगें भी शामिल हैं। कुछ पतंगें मिनिएचर आकार की हैं, तो कुछ विशाल और अत्यंत कलात्मक हैं। संग्रहालय में हाथ से चित्रित, मिरर वर्क और ब्लॉक प्रिंट वाली पारंपरिक गुजराती पतंगें भी हैं। यहां एक 16 फीट लंबी पतंग भी है, जिस पर उकेरा गया गरबा डांस आने वाले दर्शकों को बारबस ही अपनी ओर खींचता है। उत्तरायण उत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। *

सुधा कार म्यूजियम हैदराबाद

ऑटोमोबाइल डिजाइनर के. सुधाकर द्वारा तेलंगाना के हैदराबाद में स्थापित यह म्यूजियम, दुनिया का पहला हैडमेड कार म्यूजियम है। यह भारतीय नवाचार, रचनात्मकता और ऑटोमोबाइल के अनूठे संगम को दर्शाता है। सबसे खास बात है कि यहां प्रदर्शित कारें और बाइक, दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली चीजों के रूपाकार में डिजाइन की गई हैं जैसे- कैमरा, पर्स, जूता, किताब, बर्गर, क्रिकेट बैट, लिफ्टस्टिक, टेबल टेनिस बॉल आदि। सभी गाड़ियां वर्किंग कंडीशन में हैं लेकिन बिज्नी के लिए नहीं हैं। यहां दुनिया की सबसे बड़ी तिफ्लिया साइकिल और सबसे छोटी डबल डेकर बस भी देखी जा सकती है, जिन्हें गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी शामिल किया गया है। हर गाड़ी के साथ उसकी निर्माण प्रक्रिया, लागत, अधिकतम गति आदि की जानकारी भी दी गई है। यह म्यूजियम बच्चों-बड़ों सभी को पसंद आता है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना गौतम

बहुपयोगी इमली का पेड़

बढ़ती लागत, घटती पैदावार और जल संकट के इस दौर में भारत के किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह ऐसी खेती का चुनाव करें, जो कम खर्च में स्थाई और भारीसेमंद आय दे सके। इस नजरिए से इमली का पेड़ एक अच्छा विकल्प है। लंबे जीवनकाल, कम देखभाल और सूखा सहन करने की इमली के पेड़ में अद्भुत क्षमता के कारण इसे एक बार लगाने के बाद सालों साल लगातार उत्पादन देता रहता है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी इसकी स्थिर मांग बनी रहती है। आसान है खेती: खास बात यह है कि इसे खेत की मेढ़ों या बंजर भूमि पर भी उगाया जा सकता है, जो अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकता है। भारत के सबसे उपयोगी और बहुउद्देशीय पेड़ों में से एक इमली के पेड़ का वैज्ञानिक नाम टैमरिंडस इंडिका है। यह मूल रूप से अफ्रीका का पेड़ है, लेकिन प्राचीन काल से ही भारत में इसकी समृद्ध मौजूदगी रही है। दक्षिण भारत में विशेषकर कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, मध्य भारत में छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में तथा महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के अलावा असम, बंगाल और बिहार में भी इमली के पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। आर्थिक-पर्यावरणीय महत्ता: इमली सिर्फ किसानों की आर्थिक आय का ही मजबूत स्रोत नहीं बन सकता बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण पेड़ है। इमली का पेड़ 15 से 25 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। यह दीर्घजीवी पेड़ है यानी बहुत आसानी से 100 से 200 सालों तक फलता है। इसका तना तापमान इसके लिए आदर्श होता है और जिन इलाकों में सालाना 500 से लेकर 1500 मिलीमीटर तक वर्षा होती है, वहां इसे आराम से लगाया जा सकता है। यह मिट्टी का कटाव रोकता है। पशुओं के लिए छाया और चारा देता है। इमली का पेड़ कार्बन अवशोषण के लिहाज से भी महत्वपूर्ण माना जाता है और दीर्घकाल में यह खेती की उत्पादकता भी बढ़ाता है। हाल के सालों में इमली के फलों की मांग देश ही नहीं विदेश में भी काफी ज्यादा हुई है। किसानों के लिए इमली का पेड़ कम लागत में ज्यादा लाभ का शानदार जरिया है। इमली के गूदे का भारत में हर जगह विभिन्न तरह के खाए जाने वाले व्यंजनों में उपयोग किया जाता है, विशेषकर सांभर, चटनी, कढ़ी और कई तरह के पेय पदार्थ में इमली का उपयोग होता है। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में इसकी अच्छी खासी मांग है। टार्टरिक एसिड, पॉलिश और कई किस्म की दवाइयां इसके इस्तेमाल से बनाई जाती हैं। *

हाल में ही सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर गेम रियलिटी शो ‘तुम हो ना’ शुरू हुआ है। बतौर होस्ट इसके ज़रिए राजीव खंडेलवाल ने लंबे अंतराल के बाद टीवी पर वापसी की है। इस शो को एक्सेप्ट करने की क्या वजह रही? लंबे समय तक टीवी से दूर क्यों रहे? शो और करियर से जुड़े कुछ और सवाल राजीव खंडेलवाल से।

मैं वही काम करना चाहता हूं जो मुझे खुशी दे: राजीव खंडेलवाल

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

अभिनेता राजीव खंडेलवाल ने सबसे पहले एकता कपूर के टीवी डेली सोप ‘कहीं तो होगा’ से प्रसिद्धि पाई। फिर रियलिटी शो ‘सच का सामना’ के दो सीजन के दौरान उन्हें खूब लोकप्रियता मिली। लंबे गैप के बाद राजीव एक बार फिर महिलाओं के सम्मान और खुशी पर आधारित गेम-रियलिटी शो ‘तुम हो ना’ होस्ट करते नजर आ रहे हैं। यह शो खासतौर पर उन महिलाओं की लेकर बनाया गया है, जो अपने घर की बॉस हैं और मुश्किलों से भरी जिंदगी जोकर अपना मुकाम बना चुकी हैं। हाल ही में हुई लंबी बातचीत में राजीव खंडेलवाल ने इस शो से जुड़े सवालों के बेबाक अंदाज में जवाब दिए। पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश- ‘तुम हो ना’ रियलिटी शो में क्या खास लगा, जिस वजह से आपने इसे होस्ट करना एक्सेप्ट किया?

अमेजिंग / रजनी अरोड़ा

स्पेशल: इंटरनेशनल म्यूजियम-डे, 18 मई

संग्रहालय यानी म्यूजियम ऐसी जगह होती है, जहां इतिहास, कला, संस्कृति, रक्षा या विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह और संरक्षण किया जाता है। इसके अलावा कई संग्रहालयों में यूनिक आइटम्स का संग्रह भी किया जाता है। अपने देश में स्थित कुछ अनोखे संग्रहालयों पर एक नजर।

देश के अनूठे म्यूजियम

विरासत-ए-खालसा आनंदपुर साहेब

इस संग्रहालय की स्थापना पंजाब में वर्ष 2011 में की गई थी। यहां सिख गुरुओं के जीवन, खालसा पंथ की स्थापना, पंजाब के इतिहास, संस्कृति और धार्मिक संघर्षों को अत्याधुनिक मल्टीमीडिया तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसकी इमारत का अनोखा वास्तुशिल्प भी आकर्षण का केंद्र है। विशाल पेंटिंग्स, मल्टीमीडिया लाइट एंड साउंड शो, यहां आने वाले दर्शकों को ऐतिहासिक घटनाओं का जीवंत अनुभव कराते हैं। इस म्यूजियम की गिनती भारत के तकनीकी तौर पर एडवांस म्यूजियमों में की जाती है। *

नेवल एविएशन म्यूजियम गोवा

आरबीआई मॉनेटरी म्यूजियम मुंबई

साल 1998 में गोवा में स्थापित इस म्यूजियम में कई विंटेज विमान और लड़ाकू विमानों में प्रयोग होने वाले हथियार प्रदर्शित किए गए हैं। साथ ही यहां आईएनएस विराट युद्धपोत का मॉडल भी रखा गया है। इस अनोखे म्यूजियम में एवियाफिल्टक्स थिएटर भी है, जहां पर्यटक नेवल एविएशन के बारे में रोचक जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। भूख लगे तो यहां बने कॉफीट कैफे में आराम से बैठकर खा-पी भी सकते हैं। *

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा मुंबई में संचालित इस म्यूजियम की स्थापना वर्ष 2004 में की गई थी। यहां मुद्रा से जुड़ी डेढ़ हजार से ज्यादा वस्तुओं का संग्रह है। इस म्यूजियम में छठी सदी से आज तक के सिक्के और नोटों का अच्छा कलेक्शन है। पर्यटक यहां नोटों और सिक्कों के बनने का प्रोसेस भी जान सकते हैं। साथ ही समझ सकते हैं कि करेंसी में किस-किस तरह की सिस्वोरिटी फीचर होते हैं। *

सक्सेस फंडा / नेहा जैन

सफलता संसाधनों की अधिकता से नहीं, बल्कि सोच की स्पष्टता और काम करने के स्मार्ट तरीकों से मिलती है। अगर सूझबूझ और स्मार्ट तरीके से काम किया जाए तो आपको हैवी फंडिंग या भारी-भरकम टीम की जरूरत नहीं होती है। आपके काम करने का तरीका ही वह असली फंडा है, जो आपको भीड़ से अलग खड़ा करेगा और सफलता के मुकाम तक पहुंचाएगा। इस बारे में जेसन फ्राइड और डेविड हैनमेयर हैनसन की पुस्तक ‘रीवर्क’ में डिटेल में बताया गया है। लोगों पर नहीं काम पर करें फोकस: जब भी आप कोई नया काम करने की सोचते हैं, लोग तरह-तरह की बातें करते हैं और कई बार आपको हतोत्साहित करते हैं। ऐसे में आपको अपनी मेहनत और कौशल पर यकीन करना चाहिए। दूसरों के अनुभवों से डरने के बजाय अपने प्रयोग करने चाहिए। प्लानिंग से ज्यादा जरूरी एक्शन: अत्यधिक योजनाएं बनाने में समय नष्ट न करें। बस शिद्दत से काम शुरू करें, बाकी चीजें समय के साथ स्पष्ट होती चली जाएंगी। यह समझना होगा कि सिर्फ बातें

किया है। इसके अलावा बॉन्दी चुन्नी का भी उपयोग किया है। पहले मैं थोड़ा असमंजस में था, लेकिन बाद में जब लोगों ने तारीफ की तो मुझे लगा कि यह वाकई स्टाइलिश लग रहा है। सच कहूं तो इस शो में इस तरह की ड्रेस पहनने का पर्स मेरी ओर से महिलाओं को खास अंदाज में टिब्यूट देना है। ‘तुम हो ना’ से पहले आपने काफी लंबा गैप लिया। इतना लंबा ब्रेक लेने के पीछे क्या खास वजह रही? मनपसंद रोल नहीं मिल रहा था। एक ही तरह के रोल ऑफर हो रहे थे, जो तीन-चार साल तक

जब ऑफर हुआ, तो मुझे इसका कॉन्सेप्ट बहुत यूनीक और अच्छा लगा, इसलिए मैंने यह शो एक्सेप्ट कर लिया। ‘सच का सामना’ और ‘तुम हो ना’, दोनों रियलिटी शोज में आपको मुख्य तौर पर क्या फर्क नजर आता है? दोनों ही शोज रियलिटी से जुड़े हैं। दोनों में ही आम लोग पार्टिसिपेट करते हैं। फर्क यह है कि ‘सच का सामना’ में आम लोगों ने अपनी जिंदगी के कड़वे-सच्चे अनुभवों के बारे में बताया, जबकि ‘तुम हो ना’ शो में उन आम महिलाओं की कहानी है, जिन्होंने अपना जीवन अपने परिवार को समर्पित करके परिवार की स्टार बनीं। वह घर की मांएं, बेटियां और बहनें हैं, जिनकी मर्जी के बगैर घर में कुछ नहीं होता। ‘सच का सामना’ को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। रिलेटेबल और अलग हटके कॉन्सेप्ट होने के कारण ‘तुम हो ना’ को भी दर्शक खूब पसंद कर रहे हैं। आपने कुछ समय पूर्व एक वेब सीरीज भी की ‘अमर विश्वास’, जो कोर्ट रूम ड्रामा पर केंद्रित है। क्या यह सच है कि अब आपको

इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम बेंगलुरु

2018-19 में कर्नाटक के बेंगलुरु में स्थापित यह म्यूजियम, भारत का पहला इंटरएक्टिव म्यूजिक म्यूजियम है। इस म्यूजियम की स्थापना का उद्देश्य भारतीय संगीत की हजारों वर्षों पुरानी परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ प्रस्तुत करना था। यहां भारतीय संगीत के इतिहास, शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, सूफी संगीत, फिल्म संगीत और आधुनिक संगीत की यात्रा को डिजिटल डिस्प्ले, ऑडियो इंस्टालेशन और इंटरएक्टिव तकनीकों के माध्यम से समझाया जाता है। म्यूजियम में तबला, सितार, सरोद, वीणा जैसे वाद्ययंत्रों का भी प्रदर्शन किया गया है। दर्शक यहां हेडफोन, टच स्क्रीन और डिजिटल गैलरी के माध्यम से विभिन्न वाद्ययंत्रों को सुनने और स्वयं बजाने का अनुभव भी कर सकते हैं। *

ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम चेन्नई

भारत का पहला ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम की स्थापना तमिलनाडु के चेन्नई में कलाकार ए. पी. श्रीधर ने साल 2016 में की थी। यह म्यूजियम फ्रेंच आर्ट फॉर्म-ट्रॉम्प लोय या ट्रुटि भ्रमकारी कला यानी (ऑप्टिकल इल्युजन) और इंटरैक्टिव आर्ट के लिए मशहूर है। यहां की गैलरियों में दर्शकों को प्रमिट कर देने वाली 24 से अधिक इंटरएक्टिव 3-डी पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई हैं। जो आने वाले दर्शकों को एक जादुई दुनिया का अहसास कराती हैं। इनके साथ खड़े होकर फोटो लेने पर ऐसा लगता है, मानो ये पेंटिंग्स जीवित हो गई हैं। यहां आने वाले दर्शक उस दृश्य का हिस्सा-सा बन जाते हैं और उनके साथ फोटो खिंचवाए बिना नहीं रहते। ट्रिक आर्ट म्यूजियम की तर्ज पर अब बेंगलुरु में क्लिक आर्ट म्यूजियम और मुंबई में पैराडॉक्स म्यूजियम भी बनाए गए हैं। *

ब्रेन म्यूजियम बेंगलुरु

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (निमहांस) द्वारा बेंगलुरु में स्थापित यह भारत का एकमात्र और विश्व के गिने-चुने ब्रेन म्यूजियमों में से एक है। इस म्यूजियम में 400 से अधिक मानव मस्तिष्क और कई पशु-पक्षियों (जैसे- गाय, मुर्गी, चूहा, बंदर) के मस्तिष्क फॉर्मलीन केमिकल में संरक्षित करके प्रदर्शित किए गए हैं। जिन्हें पिछले 40 वर्षों में वैज्ञानिकों ने एकाग्र किया है। इनके अलावा यहां फेफड़े, वोल्कल बॉक्स, आंते और मानव कंकाल के नमूने भी हैं। शुरुआत में ये संग्रह मेडिकल छात्रों और शोध के लिए थे, लेकिन अब आम जनता के लिए भी खोले गए हैं। इसका उद्देश्य न्यूरोसाइंस की जानकारी देना, ब्रेन की संरचना, कार्य, विकास और कुछ बीमारियों (जैसे- अल्जाइमर, पार्किंसन, ब्रेन ट्यूमर) से जुड़ी भ्रांतियां दूर करने के साथ अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाना है। यहां पर्यटक असली मानव मस्तिष्क को हाथ में लेकर भी देख सकते हैं, जो रोमांच से भर देता है। *

गलतियों को सुधारें, गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें। याद रखें, काम करने का असली तरीका किताबी नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव होता है। वर्कोहलिक बनने से बचें: बिना आराम किए दिन में 15-18 घंटे काम करना मेहनत नहीं, बल्कि कुप्रबंधन है। इससे आपकी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी पर बुरा असर पड़ सकता है। असली कुशलता कम समय में गुणवत्तापूर्ण परिणाम देने में है। कम समय में स्मार्ट तरीके से काम करना ही असली कुशलता है। ‘ना’ कहना भी जरूरी: एक साथ बहुत सारे काम करने की कोशिश में हम अकसर औसत दर्जे का परिणाम देते हैं। फालतू सुझावों और ध्यान भटकाने वाली चीजों का ‘ना’ कहें ताकि आप अपनी कुशलता और बिहार में भी इमली के पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

टीवी डेली सोप से ज्यादा वेब सीरीज में काम करना पसंद है? हां, मैंने एक थिएटर किया था ‘कोर्ट मार्शल’ जो जी-टीवी के लिए था। इसमें मैंने वकील की भूमिका निभाई थी। लाइव ऑडियंस के सामने आधा-आधा घंटे के दो भाग में मेरा परफॉर्मेंस था। लाइव ऑडियंस के अलावा एनापसडी के थिएटर कलाकारों ने जब मेरी एक्टिंग की तारीफ की तो मुझे बहुत खुशी और संतुष्टि मिली। मेरा मानना है कि थिएटर में किया गया अभिनय सबसे मुश्किल होता है, बावजूद इसके थिएटर के कलाकारों को कोई अवाइड नहीं मिलता, इस बात का मुझे दुःख है। *

घर की महिलाएं होती हैं रियल स्टार

‘तुम हो ना’ महिलाओं पर केंद्रित शो है, जिसे राजीव होस्ट कर रहे हैं। उनकी पर्सनल लाईफ में महिलाओं की क्या भूमिका रही है, इस बारे में पूछने पर वह बताते हैं, मेरी डिज्नी में बचपन से लेकर आज तक महिलाओं का प्यार मां, बहन और पत्नी के रूप में हमेशा रहा है। मेरे पिता मिलिट्री में थे इसलिए मैंने अपनी मां के साथ बहुत वक्त बिताया है। आज वह नहीं हैं मेरे साथ लेकिन उनका बहुत बड़ा योगदान मेरे जीवन में है। अच्छे संस्कार और अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा और सीख मुझे मेरी मां से मिली। महिलाओं के सम्मान में मुझे यही कहना है कि जो चमकते हैं, सिर्फ वहीं स्टार नहीं होते! घर की महिला सदस्य रियल स्टार होती हैं, जो हमें बचपन से सपोर्ट देती हैं, एक अच्छा इंसान बनाती हैं, हमें आगे बढ़ने का हौसला देती हैं।